#HealthJournalism #MediaFellowships

REACH

मीडिया फेलोशिप फॉर रिपोर्टिंग ऑन एन.सी.डीज़ (2019-20)

भारत में पत्रकारों के लिए मानसिक स्वास्थ्य पर लिखने हेतु

- अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकारों के लिए 15 स्थानीय भाषा फेलोशिप के अवसर
- अंग्रेजी में रिपोर्टिंग करने वाले वरिष्ठ पत्रकार के लिए एक राष्ट्रीय मीडिया फेलोशिप का अवसर

आवेदन की समय सीमा : जून 10, 2019

http://bit.do/mentalhealthfellowship

पृष्ठभूशम नोट

REACH मीडिया फेलोशिप फॉर रिपोर्टिंग ऑन एन.सी.डीज़ (जैसे चिरकालिक श्वास रोग/क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिज़ीसेस/सी.आर.डी, डायबिटीज/ मधुमेह, दिल के रोग, कैंसर/कर्क रोग, और मानसिक स्वास्थ्य) के दूसरे संस्करण में हम आपके आवेदन का स्वागत करते है | असंक्रामक रोग 2017[1] में विश्व स्तर पर 80% विकलांगता का कारण बना और मृत्यु के शीर्ष दस कारणों में शामिल हैं।

भारत में ये रोग 60% मौतों का कारण है, जो संक्रामक रोगों से मृत्यु दर से अधिक है । एनसीडी/ असंक्रामक रोग अगले दो दशकों में देश की बीमारी का बोझ कई गुना बढ़ा सकते हैं[2]। भारत ने वर्ष 2025 तक असंक्रामक रोगों के कारण होने वाली मौतों को 25% से कम करने का लक्ष्य निर्धारित किया है । इसे 25 × 25 लक्ष्य के रूप में भी जाना जाता है।[3]

हम रीच मीडिया फेलोशिप के माध्यम से पत्रकारों की सहायता करेंगे ताकि वे असंक्रामक रोगों से जुड़े हुए अपने आस-पास होने वाले मुद्दों की पहचान करें और उन पर निरंतर और उत्तम प्रकार से लिखें । एन.सी.डी फेलोशिप के पहले संस्करण का विषय था ⊢ चिरकालिक श्वास रोग (क्रोनिक रेस्पिरेटरी डिज़ीसेस/सी.आर.डी) |
इस वर्ष मीडिया फैलोशिप **मानसिक स्वास्थय** पर केंद्रित है। मानसिक रोग जीवन की गुणवत्ता से इस हद तक बिगाड़ देती है कि यह DALYs की सबसे अधिक योगदानकर्ता है - एक DALY पूर्ण **स्वास्थ्य** के एक वर्ष के बराबर के नुकसान का प्रतिनिधित्व करता है[4]।

यह अनुमान है कि दुनिया में हर चार में से एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में मानसिक या तंत्रिका संबंधी विकारों का अनुभव करता है । मानसिक रोग में चिंता, अवसाद, सिज़ोफ्रेनिया, पदार्थ पर निर्भरता/आश्रितता सहित अन्य विभिन्न विकार शामिल हैं।

दवा, मनोचिकित्सा और पारिवारिक / सामाजिक समर्थन से लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है । मगर ये प्रबंध हर तीन में से केवल एक को उपलब्ध है जिन्हें देखभाल की आवश्यकता होती है । मानसिक बीमारियाँ भारत जैसे निम्न-मध्यम आय वाले देशों पर एक उच्च आर्थिक बोझ डालती हैं । निम्न-मध्यम आय वाले देश मानसिक रोगों का अधिक बोझ धो रहे हैं।

(1) http://www.healthdata.org/sites/default/files/files/policy_report/2019/GBD_2017_Booklet.pdf
(2) Global Status Report on NCDs 2014 – WHO http://www.who.int/nmh/publications/ncd-status-report-2014/en/
(3) https://www.who.int/features/2015/ncd-india/en/
(4) https://www.who.int/gho/mortality_burden_disease/daly_rates/text/en/
The burden of disability associated with a disease or disorder can be measured in units called disability-adjusted life years (DALYs). DALYs represent the total number of years lost to illness, disability, or premature death within a given population.DALYs are calculated by adding the number of years of life lost to the number of years lived with disability (YLDs) for a certain disease or disorder

भारत में मानसिक स्वास्थ्य

वर्ष *2016* में भारत के *12* राज्यों में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज *(NIMHANS)* द्वारा देश का पहला राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया गया था।[5]

सर्वेक्षण में पाया गया कि 18 वर्ष से अधिक आयु के वयस्कों में मानसिक विकारों का प्रेविलन्स लगभग 10.6% है। मानसिक विकारों में तम्बाकू दुर्व्यसन को छोड़कर सामान्य मानसिक विकार, गंभीर मानसिक विकार और शराब व मादक द्रव्यों के उपयोग के विकार शामिल हैं ।
महानगरों में मानसिक रुग्णता का प्रचलन अधिक है। मानसिक रोग व विकार कई एनसीडी/असंक्रामक रोगों के कारण और परिणाम, दोनों से जुड़े हुए हैं । 40 लोगों में से लगभग 1 अतीत के अवसाद और 20 लोगों में से 1 वर्तमान अवसाद से पीड़ित है। तनाव-संबंधित रोग भारत की आबादी के 3.5% को प्रभावित करते हैं और पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर लगभग दोगुना प्रभाव पाया गया है । शोध में सर्वेक्षण की गई आबादी के लगभग 1% में आत्महत्या करने की उच्च जोखिम/संभावना पाई गई थी । प्रमुख अवसादग्रस्तता विकार वाले लगभग 50% लोगों को अपनी दैनिक गतिविधियों को करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ।
भारत ने 2017 में एक मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम पारित किया, जिसने मानसिक रोगों से ग्रस्त लोगों के मानवाधिकारों को प्रमुख जगह दी है। अधिनियम ने समुदायों को शिक्षित करने, मानसिक विकारों का पता लगाने और उनका ईलाज करने के लिए जिला स्तर तक सुविधाओं और संस्थानों के एक नेटवर्क की परिकल्पना करता है। भारत में मानसिक रोगों से पीड़ित लोगों के लिए वित्त, सुविधाओं और मानव संसाधनों के एक समुचित विनियोजन की आवश्यकता है.

मीडिया और खबरों से कैसे मदद मिल सकती हैं ?

उत्तम खबर व लेखों के माध्यम से मुख्य धारा के मीडिया से लोगों की मानसिक स्वास्थय पर जानकारी और समझ में निश्चित बदलाव ला सकती है । मीडिया निम्नलिखित रूपों से प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है :

- मानसिक रोगों के मूल तथ्यों को समझाना ।
- मानसिक रोगों से ग्रसित लोगों को पहले इंसान के रूप में, जिनके पास अधिकार हैं और जिन्हें सम्मान देने की आवश्यकता है, उस रूप में प्रस्तुत करना ।
- मानसिक रोगों के बारे में मिथ्या और गलत धारणाओं को स्पष्ट करना, जिससे मानसिक विकारों से ग्रसित लोगों के खिलाफ भ्रान्ति और भेदभाव से लड़ने में मदद मिलेगी

(5) https://bit.ly/2qxFZFQ

- लोगों को बताना कि मानसिक रोग देश-प्रदेश और पूरी दुनिया में किस तादाद में मौजूद हैं ।
- मानसिक रोगों की जांच कैसे होती है और रोग होने पर लोग अपनी देख-रेख कैसे कर सकते हैं ।
- मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की नीति और कार्यक्रम-संबंधी आवश्यकताओं पर चर्चा करना ।
- मानसिक रोग होने के पर्यावरणिक, व्यावहारिक, आनुवंशिक व पोषण-सम्बंधित कारणों पर प्रकाश डालना ।
- समुदायों में, ख़ास तौर से पिछड़े हुए लोगों में, मानसिक विकारों का निदान, उपचार और प्रबंधन करने के लिए सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक निर्धारकों को अपने पाठकों को समझाना ।
- भारत में मानसिक स्वास्थ्य विकारों में जन जागरूकता बढ़ाना और नीतिगत बदलावों के लिए प्रवक्ता बनना ।
- महिलाओं और युवाओं के बीच मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना ।
- राज्यों और जिलों में मजबूत मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की आवश्यकताओं पर प्रकाश डालनmes

प्रमाणों के आधार पर लिखी गई खबरें पढ़ कर लोग स्वस्थ जीवन व्यतीत करना चाहेंगे[(6)] । वे अपने आस-पास के वातावरण में परिवर्तन लाने की कोशिश करेंगे , उदहारण के लिए: पर्यावरण संरक्षण, साफ़ खान-पान और सुरक्षित यातायात व्यवस्था, जो असंक्रामक रोगों से बचाव और पीड़ितों की देख-रेख में महत्त्वपूर्ण होती हैं। रीच मीडिया फेलोशिप इन ज़रूरतों की पूर्ती के लिए बने हैं । ये फेलोशिप मीडिया में असंक्रामक रोगों पर प्रभावशाली संभाषण को केंद्रित करने में मदद करते हैं |

आवेदन के बारे में अधिक जानकारी के लिए http://bit.do/mentalhealthfellowship पर जाएं |

स्थानीय भाषा फ़ेलोशिप

- आवेदन फॉर्म हिंदी में डाउनलोड करने के लिए यहाँ क्लिक करें ।
- आवेदन फॉर्म अंग्रेज़ी में डाउनलोड करने के लिए यहाँ क्लिक करें ।

नेशनल फ़ेलोशिप

- आवेदन फॉर्म अंग्रेज़ी में डाउनलोड करने के लिए यहाँ क्लिक करें ।

(6) Rigotti NA, Wakefield M. Real People, Real Stories: A New Mass Media Campaign That Could Help Smokers Quit. Ann Intern Med. 2012;157:907-909. doi: 10.7326/0003-4819-156-1-201201010-00541